साहित्य संहिता
Available at http://sahityasamhita.org/
ISSN: 2454- 2695
Volume 01 Issue 02
March 2015

प्यार के मायने

किसी को मिली ख़ुशी, किसी को गम

कोई रह गया तनहा करके प्यार

कितना हुआ दिल पे सितम

'साहिल' हुआ महसूस करके प्यार

ख़ुशी उनकी आँखों में मेरी आँखें नम

कैसा कैसा दर्द उठता है रह रहकर

मैं पतझड़, दुनिया सावन का मौसम

प्यार तो है अथाह समुन्दर

देख लो खुद करके पार

प्यार को कहते है धोखा

जो डूब जाते है भँवर में पड़कर

प्यार के प्यार के रूप में देखा

किस्तियां आख़िर लगी हैं साहिल पर

शशिकांत निशांत शर्मा 'साहिल'